स० मर्शाक

क्या मतलब है एक मील का?

स० मर्शाक

क्या मतलब है एक साल का?

अनुवादक : डा० मदनलाल "मधु"
चित्रकार : वील्ली त्रुब्कोविच

प्रगति प्रकाशन
मास्को

सभी स्कूलों में
अब अपने
काहिल नहीं अधिक मिलते,
नयी पौध के बालक
कक्षा, कक्षा में
बढ़ते चलते।

फिर भी मुझको
किसी स्कूल के
निकट मिल गया दोसाला,
बातचीत मैंने उससे की।

और प्रश्न यह कर डाला:
"सुनो,
मुझे इतना बतलाओ,
कुछ शब्दों में यह समझाओ –
इसमें भी क्या तुक है आखिर
क्या पाते हो साल गंवाकर?
एक क्लास में
तुम पूरे दो साल लगाकर?

पांच साल की बनी योजना
तीन-चार सालों में अपना
पूरा ज़ोर लगाकर उसको
लोग हमारे निपटाते,
एक क्लास में तुम तो लेकिन
दो सालों तक रुक जाते!
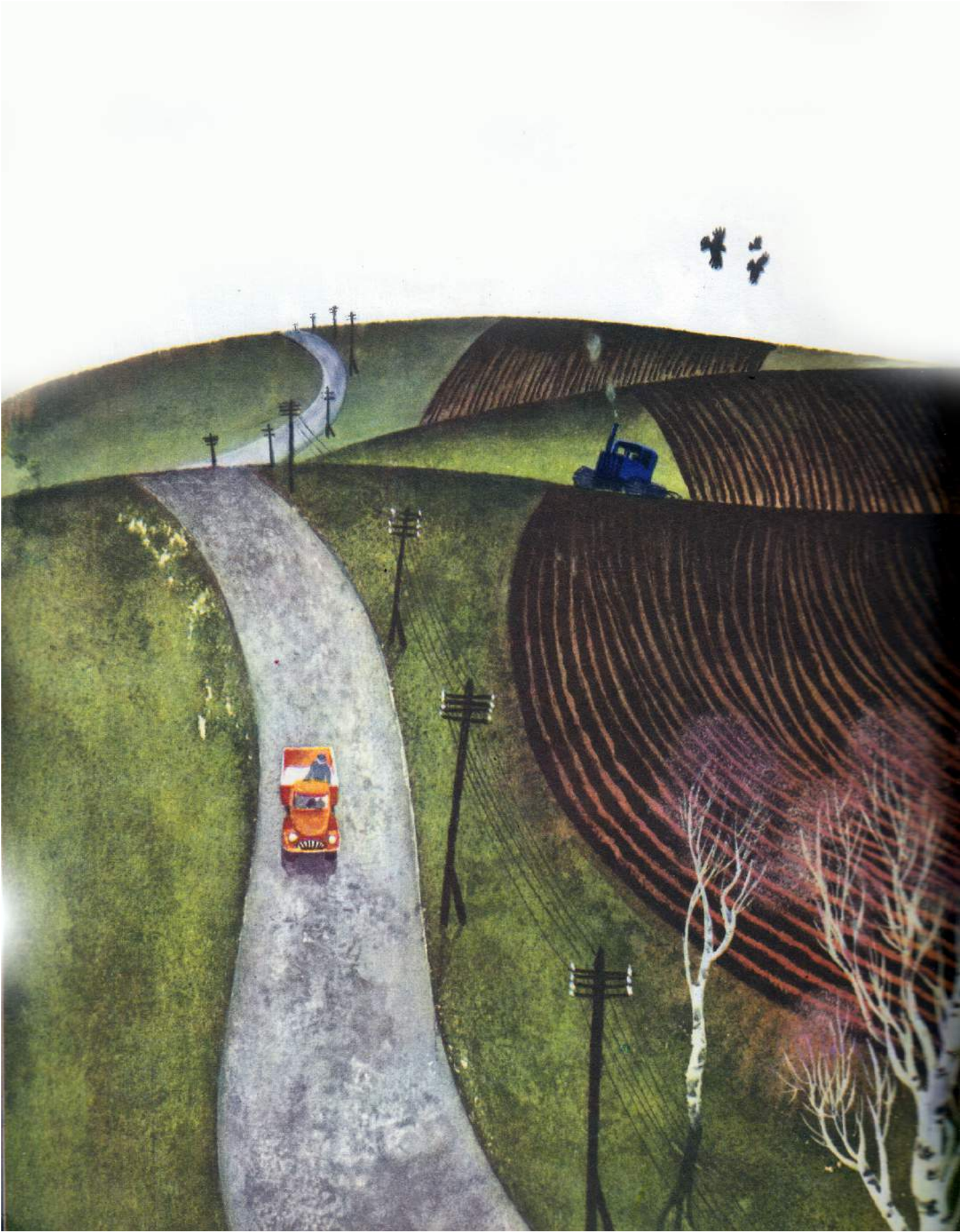
बर्फ़ पिघलते ही किसान भी
राह सभी लेते खेतों की,
नहीं समय अपना खोयें,
कितनी धरती में हल जोतें,
वे कितनी धरती बोयें!
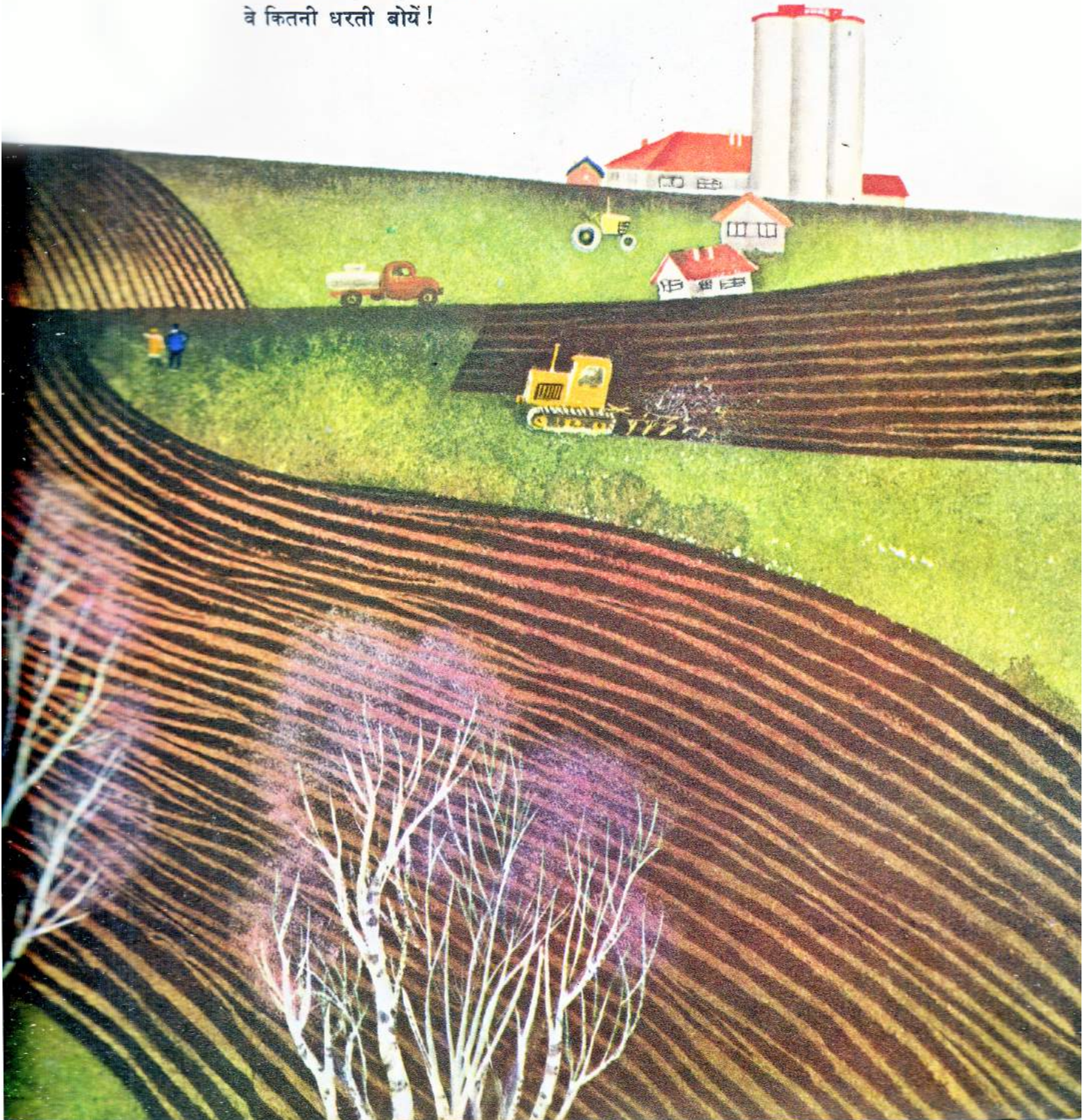
खनिक खान से
भू-खदान से
खनिज निकाल उबार रहे,
ह्वेल शिकारी
श्रम कर भारी
ह्वेलें कितनी मार रहे!

एक साल में
कपड़ा मिल में
कितना कपड़ा बन जाता,
कितनी बनें मशीनें, इंजन
गिनना मुश्किल हो जाता!
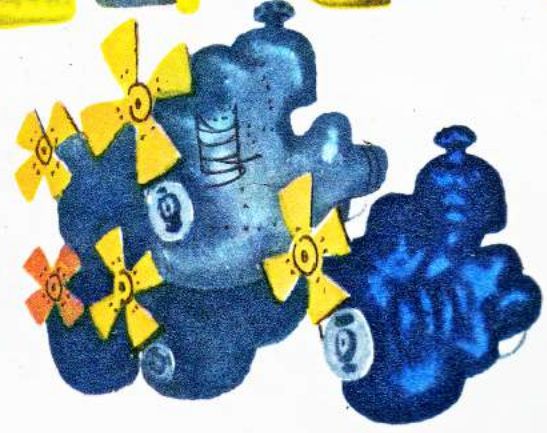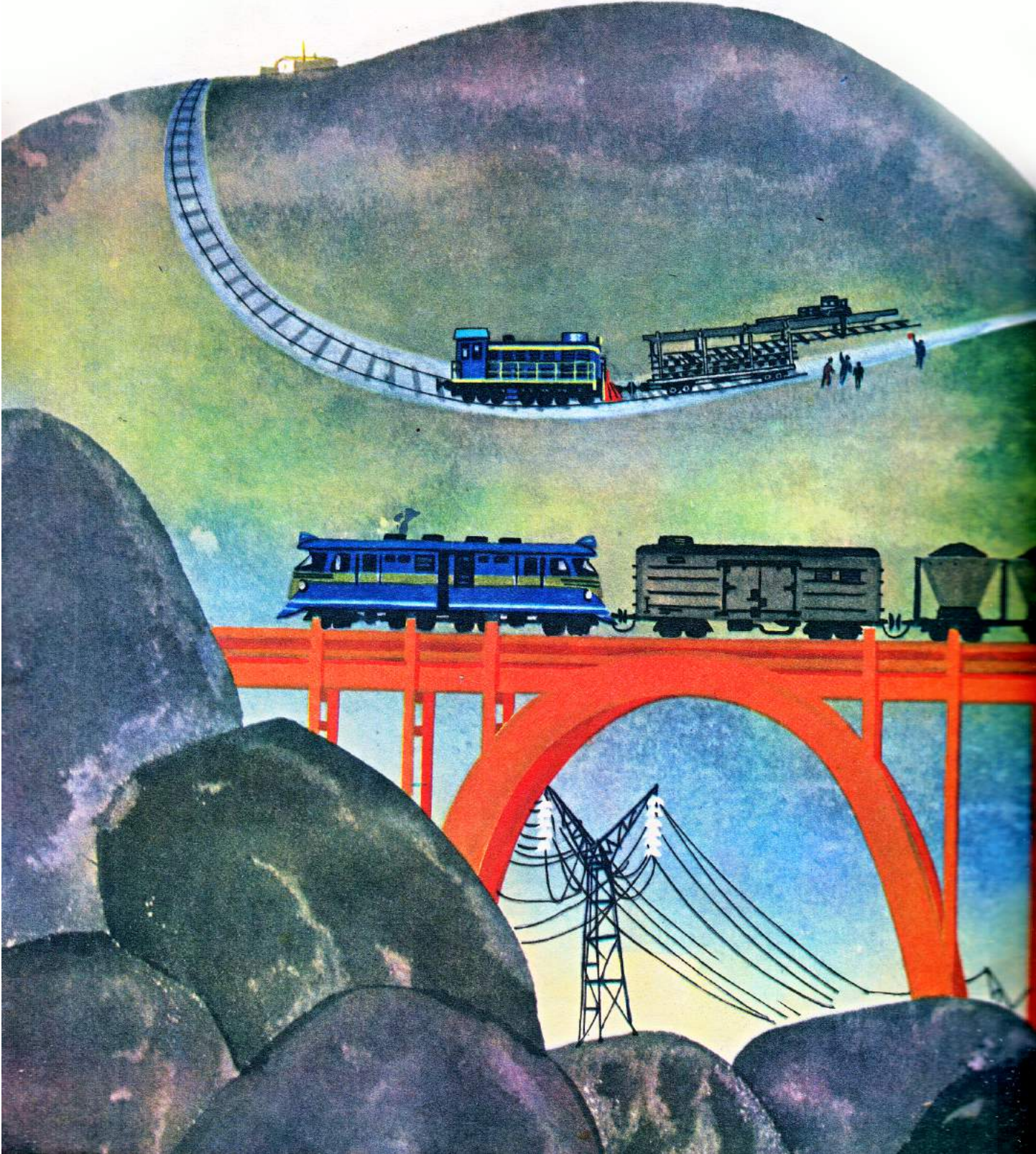
बिछें रेल की नयी पटरियां
ग्रौर स्लीपर कई हज़ार,
मोटे-मोटे ग्रंक निकालें
सभी रसाले
बारह् बार।

एक साल में बन जाता है
कई मंज़िला नया मकान,
बछड़ा गाय, सांड़ बन जाता
और बछेरा
अश्व जवान।
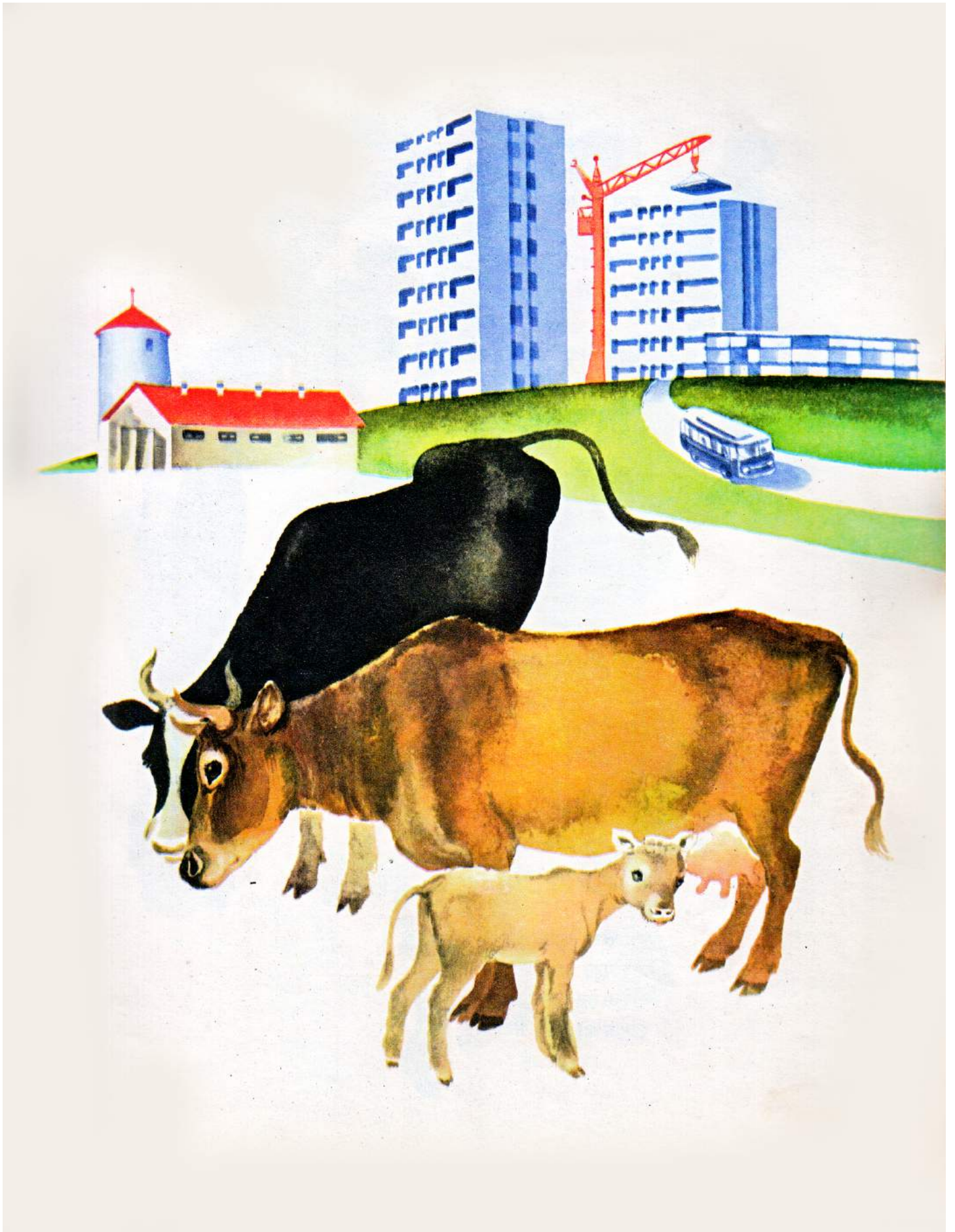
साल गुज़रते,
कभी न मुड़ते,
आगे ही बढ़ते जाते,
सन् पचास को
वापस आते
देख कभी क्या हम पाते?

नहीं, साल यह बीते ज्योंही
नया साल आगे आये,
इसका मतलब
नहीं छात्र भी
साल टाल अपना पाये।

फिर स्कूल में तुम को वे ही
पाठ पड़ेंगे दुहराने,
छोटों के संग
और साथ में
ताने भी होंगे खाने।

स्वयं समझते
अगर पिछड़ते
और साल अपना खोते,
इसका मतलब आगे बढ़ती
कक्षा जो ऊपर चढ़ती,
जुदा सदा को तुम होते...

कल खेला फ़ुटबाल मज़े से
खेल बहुत अच्छा फ़ुटबाल,
लेकिन तब, यदि इससे तेरा
बुरा न हो पढ़ने में हाल।

यदि 'दिनामो'
या 'तोरपेदो'
किसी टीम के दीवाने
बेशक ऐसे बने रहो,
लेकिन तड़प पढ़ाई की भी
ऐसी ही तो दिल में हो!

पाठ न यदि तैयार करोगे
अंक मिला यदि ज़ीरो गोल–
इसका मतलब
ख़ुद ही तुम ने बाज़ी हारी,
खुली तुम्हारी सारी पोल
किया स्वयं अपने पर गोल।

फ़िल्म देखने जा सकते कल
कल है छुट्टी, दिन इतवार,
किन्तु पढ़ाई यदि तुम छोड़ो
और किताबों से मुंह मोड़ो,
तो है सिनेमा भी बेकार।

क्या जाने से पहले अपना
अगले दिन का
पाठ न कर सकते तैयार?
फ़िल्म बनाने वालों ने भी
नहीं काम में ढील कभी दी
दिया वक़्त पर भार उतार।

फ़सलें ठीक समय पर कटतीं
फ़ैक्टरियां भी
ठीक वक़्त पर
उत्पादन को पूरा करतीं,
इसी तरह से
एक वर्ष में
तुम भी पूरी करो पढ़ाई,
दोसालों के लिये स्कूल में
नहीं जगह अब, मेरे भाई!"

•